¸bMZ wkÿv

wkÿv wb‡q mevi gv‡S Pj‡Q gvZvgvwZ|

G cøvm hw` bv cvq evQv, n‡ebv †Kvb MwZ|

Wv³vi Zv‡K evbve Avwg, bB‡j BwÄwbqvi|

Zv bv n‡j, mgv‡R †KD Ki‡e Avgvi †Kqvi?

wb‡`b evQv †Kivbx n‡e, ¸b‡e UvKv nvRvi|

\_vK‡ebv Avi Afve †Kvb, e¨vM fwZ© evRvi|

eo n‡q Kvi nvKv‡e, XvKvq `vgx d¬¨vU|

‡m›Uªvj Gwm \_vK‡e N‡i, †m¸b Kv‡Vi LvU|

‡LvKvUv Zvnvi gvbyl n‡jv wK? †e‡o‡Q †Kvb gvb?

cv‡Vi jÿ¨ †f‡¯Í †Mj wK? e„\_vB DcvR©b|

mgv‡Ri Z‡i wPšÍv bvB‡Kv, †`k‡cÖ‡g bvB gb|

cy\_MZ Ávb †c‡q‡Q ïay, ‡evSv nj †mBRb|

gvby‡li gZ gvbyl n‡j, mgv‡Ri n‡e ab|

‡h †ckvq †m \_vKzK evQv, ¯^v\_©K †m Rxeb|

 গুনগত শিক্ষা

শিক্ষা নিয়ে সবার মাঝে চলছে মাতামাতি।

এ প্লাস যদি না পায় বাছা, হবে না কোন গতি।

ডাক্তার তাকে বানাব আমি, না হয় ইঞ্জিনিয়ার।

তা না হলে, সমাজে কেউ করবে আমায় কেয়ার।

নিদেন বাছা কেরানী হবে, গুনবে টাকা হাজার।

থাকবেনা আর অভাব কোন, ব্যাগ ভর্তি বাজার।

বড় হয়ে কার হাকাবে, ঢাকায় দামী ফ্ল্যাট।

সেন্ট্রাল এসি থাকবে ঘরে, সেগুন কাঠের খাট।

খোকাটা তাহার মানুষ হল কি? বেড়েছে কোন মান?

পাঠের লক্ষ্য ভেস্তে গেল কি? বৃথাই উপার্জন।

সমাজের তরে নেইকো চিন্তা, দেশপ্রেমে নাই মন।

পুথিগত জ্ঞান পেয়েছে শুধু, বোঝা হল সেইজন।

মানুষের মত মানুষ হলে, সমাজের বড় ধন।

যে পেশায় সে থাকুক বাছ, স্বার্থক সে জীবন।